कंचन कुमारी
अतिथि. शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

(20) कामायनी - जयशंकर प्रसाद, इड़ा सर्ग

तुम जरा मरण में चिर अशांत
जिसको अब तक समझे थे सब जीवन में परिवर्तन अनंत
अमरत्व वही अब भूलेगा तुम व्याकुल उसको कहो अंत
दुखमयी चिर चिंतन के प्रतीक श्रद्धा वंचक बनकर अधीर
मानव संतति ग्रह रश्मि रज्जु से भाग्य बाँध पीटे लकीर
कल्याण भूमि यह लोक यही श्रद्धा रहस्य जाने न प्रजा
अतिचारी मिथ्या मान इसे परलोक वंचना से भर जा
आशाओं में अपने निराशा बुद्धि विभव से रह भ्रांत वह चलता रहे सदैव श्रांत।"

प्रसंग — काम मनु को अन्तिम संदेश ध्वनि देता है।

व्याख्या :- हे मनु! तुम सुर होकर भी हमेशा वृद्धावस्था तथा मृत्यु भय से व्याकुल रहोगे। अब तुम विचार को विस्मृत कर दोगे कि जीवन में होने वाले अनेकों परिवर्तनों का नाम ही अमरता की है परन्तु मनु

तुम जीवन से आतंकित होकर अमरता की परिभाषा इस प्रकार करने लगोगे कि जीवन का समाप्त होना ही अमरता की संज्ञा से अभिहित किया जाता है क्योंकि जीवन के समाप्त होते ही मानव संसार के दुखों से मुक्त हो जाता है। हे मनु! तुम्हारा चित्त तो पहले ही चिंतनशील था परन्तु अब आगे द्वन्द्वपूर्ण अवस्था में रहते हुए निरंतर चिंतन की प्रतिमा बन जाओगे और विश्वासमयी नारी श्रद्धा को छलने के कारण सदा ही व्यथित रहोगे। तुम्हारी ये मानव-सृष्टि भी नक्षत्रों की रूपी रस्सी से अपने भाग्य को बांध कर अंधानुकरण करती रहेगी अर्थात मनुष्य भाग्यवादी होकर प्राचीन परम्पराओं तथा रूढ़ियों अर्थात का अंधानुकरण करते हुए अपना जीवन बिताने लगेगी। हे मनु! यह संसार कल्याण भूमि है इसी धरती पर मानव को कल्याण की प्राप्ति हो सकती है। किन्तु तुम्हारी सृष्टि श्रद्धाहीन होने के कारण इस सत्य से अनभिज्ञ रहेगी। तुम्हारे प्रजाजन तो अपनी इच्छा के अनुसार आचरण

करेंगे और इस संसार को मिथ्या स्वीकार करेंगे। वे हमेशा मिथ्या विश्वास में संलग्न रहकर परलोक सुख की प्राप्ति का विचार करेंगे तुम्हारी समस्त प्रजा सदा ही निराशा मग्न रहेगी एवं उसकी कोई भी आशा परिपूर्ण नहीं होगी। वह बौद्धिक उत्थान हेतु भरसक कष्ट भोगती रहेगी। उसे कभी शांति प्राप्त नहीं होगी।